बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

रमानाथ का चरित्र चित्रण

प्रेमचन्द एक सच्चे कलाकार थे। उनका जीवन संघर्षमय परिस्थितियों में व्यतीत हुआ था। वह जन–जीवन के निकट संपर्क में रहे थे। इसी कारण उनके पात्रों में भी सजीवता है। अपने उपन्यासों के विविध पात्रों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को दूर करना उनका उद्देश्य था।

'गबन' का कथानक एक निम्नमध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। यह वह वर्ग है, अपनी शिक्षा के कारण समाज में ऊपर तो उठ गया है, किंतु धन की कमी के कारण सही विकास नहीं कर पाया। इसी कारण झूठी आत्मप्रशंसा, देश–प्रेम का अभाव, धन के पीछे सब कुछ भूल जाना आदि कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो सामान्यतः इस वर्ग के अधिकांश व्यक्तियों में पायी जाती है। इस वर्ण की इसी प्रवृति को व्यक्त करने के लिए 'गबन' में रमानाथ को प्रस्तुत किया गया है।

रमानाथ उपन्यास का नायक है। उपन्यास के पुरूष–पात्रों में उसका प्रमुख स्थान है। उपन्यास की सभी घटनाओं का वह केंद्र बिन्दु है। उसके चरित्र के कारण उपन्यास का कथानक विकसित होता चलता है। उसके चरित्र को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–प्रयाग का गृहस्थ जीवन तथा कलकता का प्रवास काल। रमानाथ का चरित्र प्रांरभ से अंत तक एक ही धारा में प्रवाहित होता चलता है, लेकिन प्रयाग और कलकत्ता की परिस्थितियों में अंतर होने के कारण उसके चरित्र की भिन्न–भिन्न विशेषताएँ सामने आती है। प्रयाग से गबन के भय से भागने की घटना भी उसके चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता को संमुख लाती है। लेखक ने उसके चरित्र को प्रारम्भ में जैसा चित्रित किया है। वह अंत तक उसी रूप में दिखायी देता है। उसके चरित्र में अपनी दुर्बलताओं को जानकर भी उनसे मुक्त होने की सामर्थ्य नहीं है। वह जानता है कि वह बुरा काम कर रहा है, फिर भी वह उसे करता है। उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब उसकी आत्मा यह कहती है कि वह अनुचित कार्य कर रहा है, लेकिन उस कार्य को करने

से वह अपने को रोक नहीं पाता। उसके चरित्र की यह सबसे बड़ी दुर्बलता है। इसके कारण ही उपन्यास में विभिन्न घटनाओं एवं परिस्थितियों का जन्म होता है।

रमानाथ दयानाथ का पुत्र है। दयानाथ पचास रूपये मासिक पर कचहरी में नौकर थे। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रमानाथ को पढ़ाई छोड़नी पड़ी। पिता ने उससे साफ कह दिया कि मैं तुम्हारी डिग्री के लिए सबको भूखा और नंगा नहीं रख सकता, पढ़ना चाहते हो तो अपने पुरूषार्थ से पढ़ो। किंतु रमानाथ में इतनी प्रेरणा एवं लगन नहीं थी। वह सारा दिन शतंरज खेलता, सैर–सपाटे करता और माँ और छोटे भाईयों पर रोब जमाता। दोस्तों की बदौलत उसका शौक पुरा हो जाया करता– किसी का चेस्टर माँग लिया, किसी का जूता माँग कर पहन लिया और किसी की घड़ी कलाई पर बाँध ली, कभी बनारसी फैशन में निकले, कभी लखनबी फैशन में। रमानाथ के इस व्यवहार के कारण ही उसका पिता दयानाथ उसका विवाह कर देना अधर्म समझता है। लेकिन अपनी पत्नी जागेश्वरी के दबाव के कारण दयानाथ को जालपा वाला रिश्ता मान लेना पड़ा।

रमानाथ में से ही दिखावा की प्रवृति रही है। वह चाहता था कि बारात ऐसी धूम–धाम से निकले कि गाँव भर में शोर मच जाए। पहले दुल्हे के लिए पालकी का विचार था, लेकिन रमानाथ ने मोटर पर जोर दिया। उसे ठाट–बाठ, से रहने का शौक था और विवाह के बाद वह टेनिस शर्ट, पतलून तथा कैनवस पहनकर निकलता है। उसकी इसी मनोवृति के कारण विवाह पर अत्यधिक खर्च किया गया और लोगों का रूपया उधार हो गया। रमानाथ की इसी मनोवृति ने उसे क्रमशः पतन की ओर अग्रसर कर दिया।

उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैः–

(1) कायर एवं मिथ्याभिमानीः– मिथ्याभिमान रमानाथ के चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसी कारण उसके विवाह में शान–शौकत के लिए अंधाधुंध खर्च किया जाता है, जिससे सर्राफ के रूपये चुकाए न जा सके। रमानाथ ने आर्थिक स्थिति का सच्चा रूप अपनी पत्नी को भी नहीं बतलाया। वह जालपा से अपनी स्थिति की खूब बढ़–बढ़कर बातें करता हैः–''जमींदारी है, उससे कई हजार का नफा है। बैंक में रूपये है, उनका सूद आता है। (गबन,पृष्ठ–16)

(2) नैतिक बंधनों की शिथिलताः– रमानाथ के चरित्र की दूसरी विशेषता उसके नैतिक बंधनों की शिथिलता है। वह प्रत्येक अवसर पर झूठी बात कहकर काम चलाने का अभ्यस्त हो गया है। वह अपने माता–पिता से तो झूठ बोलता है, रतन को भी धोखे में रखता है। उसके रूपयों को अपने उधार रूपये चुकाने के काम में लाता है और असत्य स्थिति बताकर टालता रहता है। वह अपनी पत्नी जालपा से भी झूठ बोलता है और सत्य स्थिति को छिपाता रहता है। म्युनिसिपैलिटी में नौकरी मिलने पर वह जालपा से कहता है कि उसे चालीस रूपये मिलते है और माता–पिता को केवल बीस रूपये ही बताता है। उसके पिता दयानाथ को जब यह ज्ञात होता है कि वह रिश्वत लेता है तो वह उसे ईमानदारी

का पाठ पढ़ाते है, लेकिन वह उनकी एक नहीं सुनता। वह कह देता हैः–'' दस्तुरी रिश्वत नहीं है, सभी लेते हैं और खुल्लम–खुल्ला लेते हैं। लोग बिना माँगे आप ही आप देते है, मैं किसी से माँगने नहीं जाता।''(गबन, पृष्ठ52)

रमानाथ के चरित्र में नैतिक बंधनों की शिथिलता सर्वत्र देखी जा सकती है। सारे उपन्यास में केवल जोहरा ही एक ऐसा पात्र है जिसके साथ वह झूठ, कपट तथा दगाबाजी का व्यवहार करता है। रतन, वकील साहब, देवीदीन, जग्गो आदि निश्छल पात्रों के साथ भी वह कपट एवं छल का व्यवहार करता है। प्रयाग में वह पत्नी–भक्त दिखाई देता हैं, लेकिन कलकत्ता आने पर वह भ्रष्ट एवं पतित हो जाता है और पुलिस के झूठे प्रलोचनों में फंसकर वेश्या के साथ मनोविनोद एवं आनंद करता है। वह अपने स्वार्थ के लिए बेगुनाहों के विरूद्ध झूठी गवाही देने को तैयार हो जाता है। अपने को पुलिस के चंगुल से बचाने के लिए वह निरपराधियों को फाँसी दिलवाने में नहीं हिचकता। जालपा उसे इस पाप से जालपा चाहती है। वह यह नहीं चाहती कि उसके पति के कारण अनेक व्यक्तियों का खून हो और उसे अपयश मिले। लेकिन उसकी प्रेरणाएँ निष्फल होती है। रमानाथ का दुर्बल चरित्र पुलिस के सामने घुटने टेक देता है।''मुझमें अब ठोकरें खाने की शक्ति नहीं है। न मैं पुलिस से रार ले सकता हूँ। दुनिया में सभी थोड़े ही आदर्श पर चलते है। मुझे क्यों उस ऊँचाई पर चढ़ाना चाहती हो, जहाँ पहुँचने की शक्ति मुझ में नहीं है।''(गबन, पृष्ठ255)

उसके चरित्र में यह अशक्तता उसमें नैतिक बंधनों की शिथिलता के कारण ही उत्पन्न होती है। उसके दुर्गुणों ने उसे इतना दुर्बल बना दिया है कि परिस्थितियों के अनुकूल होने पर भी वह नैतिक पक्ष पर दृढ़ता से टिक नहीं पाता और तनिक–सा भय एवं लालच उसे पतन की ओर खींच ले जाता है।

(3) हृदय की सरलता एवं उदारताः–रमानाथ के चरित्र में थोड़ा–बहुत उज्ज्वल अंश भी विद्यमान है। वह पत्नीव्रत का पालन करता है। अनेक बुराइयों से युक्त रमानाथ के बारे में लेखक ने लिखा हैः– पति की दृष्टि से वह आदर्श है और जालपा अगर माँगती तो प्राण तक उसके चरणों पर रख देता है, रूपये की हकीकत ही क्या।'' जालपा भी रमानाथ जैसे रसिक, सहृदय एवं निःस्वार्थी पति को पाकर अपने भाग्यशाली समझती है। वकीलों की बहस ने रमानाथ के चरित्र को निखार दिया है। उसकी सरलता एवं सहृदयता ने एक वेश्या तक को मुग्ध कर लिया और वह उसे बहकाने तथा बहलाने के स्थान पर उसके मार्ग का दीपक बन गई। उसके हृदय में मातृभक्ति भी विद्यमान है। आदर्श पुत्र की तरह वह अपने सिर पर भारी बोझ उठाकर भी माँ को कंगन भेंट कर अपना कर्त्तव्य निभाना चाहता है। यही नहीं, देवीदीन की पत्नी जग्गो को भी उसने माता के सदृश मान लिया और पुलिस द्वारा प्राप्त कंगन उसे देने आता है।

रमानाथ उन सभी दुर्बल मनुष्यों की भाँति एक साधारण मनुष्य है जिनके जीवन में सात्यिक जीवन कभी आदर्श नही हो सकता। ऐसे व्यक्तियों को अपना कोई आदर्श नहीं होता न कोई ध्येय होता है। ऐसे व्यक्तियों को परिस्थितियाँ जिधर ले जाती है, उधर ही वह बढ़ते

रहते है। परिस्थितियों का सामना करके अपने चरित्र को बलवान बनाने की सामर्थ्य ऐसे चरित्रों में नहीं होता। रमानाथ जैसे पतित व्यक्ति का अंत में सुधार होता देखकर पाठक को आश्चर्य होता है। परंतु यह तो प्रेमचंद जी की उस आर्दशवादिता का परिणाम है, जिसकी झलक हम उनके सभी उपन्यासों में पाते है। प्रेमचंद की आदर्शवादिता रमानाथ को ठीक मार्ग पर लाकर खड़ा कर देती है और वह गाँव में आकर निश्छल जीवन व्यतीत करने लगता है।

इस प्रकार, आदर्शवाद के कारण रमानाथ के चरित्र–चित्रण में अंत में कुछ अतिरंजना अवश्य आ गई है, किंतु यथार्थता का आधार कहीं भी कम नहीं होने पाया है। वास्तव में रमानाथ के रूप में उपन्यासकार ने मध्यवर्ग के एक ऐसे नवयुवक का यथार्थ अंकन किया है जो जीवन का कोई लक्ष्य नहीं समझता। एक साधारण विद्यार्थी से जालपा के पति होने म्युनिसिपैलिटी में नौकरी करने तथा पुलिस के चंगुल में फँसने तक वह शक्तिहीन तथा लक्ष्यहीन चरित्र का व्यक्ति रहा है। अपनी दुर्बलताओं के कारण ह ीवह अपनी पत्नी के गहनों की चोरी करता है, उधार गहने खरीदने के पक्ष में न होते हुए भी दुकानदारों की दृष्टि में अमीर बाबू बनने के लिए गहने खरीद लेता है, रतन के रूपयों के सबंध में असत्य बातें बनाता रहता है, अपनी पत्नी से भी रूपये और आभूषण माँगने में शर्माता है, कायस्थ होने पर भी सरल–हृदय वाले देवीदीन के संमुख अपना परिचय देते समय स्वयं को ब्राहम्ण बताता है, पुलिस के चंगुल में फँसकर झूठी गवाही देने के लिए मुखबिर बन जाता है, प्रलोभनों एवं भय के सामने देवीदीन तथा जालपा को दिए गए वचनों को भूल करने वाला रमानाथ मध्यवर्गीय दुर्बलता का ऐसा शिकार हुआ कि न तो वह अपना अमीरी की ही रक्षा कर सका और न जालपा को सुखी रख सका। वस्तुतः उपन्यासकार ने उसके चरित्र के माध्यम से मध्यवर्गीय व्यक्ति की अर्थाभाव से उत्पन्न परिस्थिति एवं प्रदर्शन की भावना को चित्रित किया है। इस दृष्टि से रमानाथ का चरित्राकंन सफल रहा है।